किताब संवेदना की

डॉ. कृष्ण कन्हैया

काव्य संग्रह

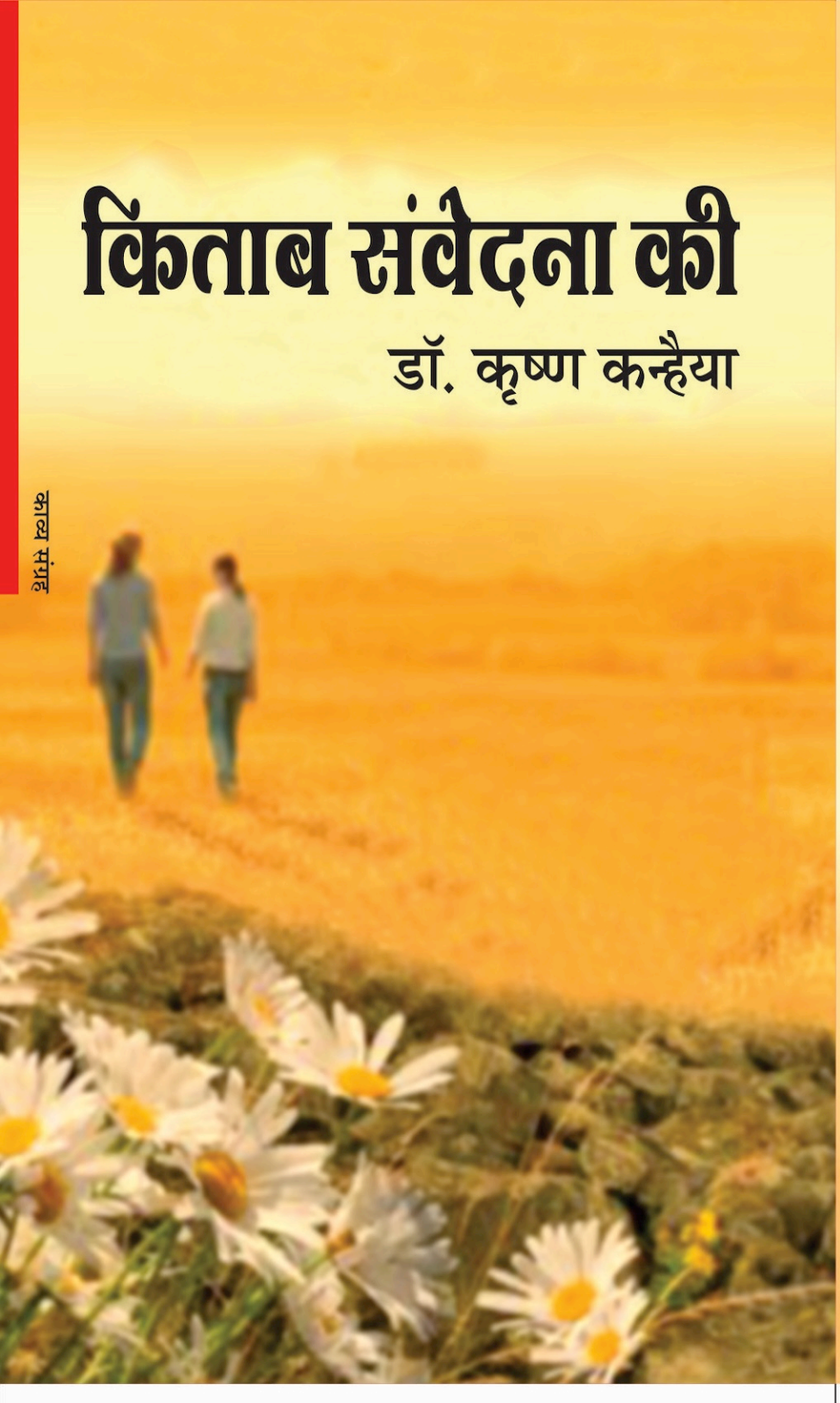

डॉ. कृष्ण कन्हैया

जन्म स्थान:- पटना, बिहार, भारत

शिक्षा:- एम.बी.बी.एस.(आनर्स), एम.एस.(सर्जरी), एफ.आर.सी.एस.(एडिनबरा), एम.आर.सी.जी.पी.(लंडन), डी.एफ.एफ.पी.(लंडन)।

संक्षिप्त विवरण: कविता-शायरी के साथ-साथ संगीत का शौक विद्यार्थी जीवन से था जो समय के साथ-साथ जिंदगी से जुड़ता चला गया। बचपन में तुकबन्दी करता था पर नियमित रूप से लिखना कॉलेज के दिनों से शुरू हुआ जो 1995 में मेरे इंग्लैंड आने के बाद भी जारी है। विदेश आने के बाद अपनी संस्कृति का गर्व, अपने संस्कार की गरिमा, अपने गाँव की शुद्ध सौंधी ख़ुशबू और अपनी मातृभूमि से अनवरत लगाव मेरी अन्तरात्मा को ज़्यादा उद्वेलित करने लगा था जिसकी झलक अब भी मैं अपनी कविताओं, गजलों और शेरो-शायरी में हरदम महसूसता हूँ।

2005 में 67 कविताओं की कविता संग्रह प्रकाशित हुई। 2008 में प्रकाशित हुई प्रवासी कवियाओं का संकलन 'सूरज की सोलह किरणें' में मेरी कवितायें प्रकाशित हुई। 2012 में द्विभाषीय कविता संग्रह "किताब जिंदगी की" वाणी प्रकाशन से छपी। 2013 में प्रवासी भारतीयों की कविताएँ 'देशान्तर' में कवितायें छपी । ई-पत्रिका 'अनुभूति' में कवितायें और गजल छपी है। और त्रिमासिक पत्रिका आधुनिक साहित्य में भी कविताये प्रकाशित होती हैं।

मैं 15 सालों से गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक संगठन से जुड़ा हूं और 8 सालों से जेनरल सेक्रेटरी हूँ। इंग्लैण्ड में देश- विदेश के रचनाकारों का हर साल कवि सम्मेलन आयोजित करता हूं और संचालन भी करता हूं।

2013 में लक्ष्मीमल सिंघवी एवार्ड से भारतीय काउंसिल लंडन में सम्मानित हुआ और फिर 2013 में ही पद्मानन्द साहित्यिक सम्मान से हॉउस ऑफ लार्ड में सम्मानित किया गया।

सम्प्रति General Practioner with Special Interest
Waterfront Surgery, Brierley Hill, Dudley
DY5 1RU, West Midlands England UK

सम्पर्क: Z 182 Oakham Road Tividale Oldbury
West Midlands England UK B69 1PY

ई-मेल: kanhaiyakrishna@hotmail.com मोबाइल: +447803598165

किताब संवेदना की

प्रकाशक
विश्व हिंदी साहित्य परिषद्
शालीमार बाग, दिल्ली-110088
मो. -9811184393
vhspindia@gmail.com

978-93-84899-76-9

₹ 300

किताब संवेदना की

(काव्य-संग्रह)

डॉ. कृष्ण कन्हैया

विश्व हिंदी साहित्य परिषद

सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN No. : 978-93-84899-76-9

© कॉपीराइट : लेखक

प्रकाशक : विश्व हिंदी साहित्य परिषद
एडी-94/डी, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
दूरभाष : 09811184393, 011-47481521
email : vhspindia@gmail.com

मुद्रक : एपेक बिजनेस सोल्यूशन्स प्रा. लि.
4653/21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

प्रथम संस्करण : 2020

कुल पृष्ठ : 136

मूल्य : ₹ 300

KITAAB SAMVEDNA KEE
By DR. KRISHNA KANHAIYA
First Edition : 2020
Published by : Vishwa Hindi Sahitya Parishad, Shalimar Bagh, Delhi-110088
Price : ₹ 300

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर विक्रय या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंद अथवा किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के ख़रीददार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित है।

समर्पण

मेरी यह पुस्तक "किताब संवेदना की" मैं संसार की समस्त माताओं को समर्पित करता हूं जिनकी निष्ठा, त्याग, प्रेम और वात्सल्य जितना निश्छल और स्वच्छ होती है उतनी ही उनकी ममता !

किताब संवेदना की

'किताब संवेदना की' मिडलैंड्स निवासी डॉ. कृष्ण कन्हैया की बहुत ही लम्बी साहित्यिक यात्रा की तीसरी कलाकृति है। 1996 से यू.के. में प्रवासी रचनाकार के लेखन की पृष्ठिभूमि का विकास निरंतर होता रहा है जिसमें यह देखा जा सकता है कि उनकी स्नेहिल निष्ठा जन्मभूमि एवं कर्मभूमि दोनों के प्रति समान है, जो इनकी सारी कविताओं में प्रत्यक्ष परिलक्षित है। 'गीतांजलि बहुभाषीय साहित्यिक समुदाय' से 2005 से संबद्ध, और अब इसके मुख्यसचिव, डॉ. कृष्ण कन्हैया के व्यक्तित्व में यशोदा नंदन कृष्ण एवं कन्हैया दोनों के गुण देखे जा सकते हैं। कृष्ण के स्वरूप में जहां वह प्यार-स्नेह बिखेरते हैं वहीं कन्हैया का जामा पहनते ही भौतिक रूप से लोगों को अपनी बाहों-कंधों पर बिठाने की चाहत भी रखते हैं। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि विधि के विधान ने उन्हें मेडिकल डाक्टर के साथ-साथ कवि भी बनाया है। मेरी मान्यता है कि कन्हैया जन्मजात कवि हैं जो परिस्थितियों एवं सामाजिक अपेक्षाओं के कारण डॉक्टर बन गए। आने वाला समय यह सिद्ध करेगा कि इनकी स्थायी ख्याति किस रूप में अच्छी तरह से स्थापित हो कर ऊंचे-ऊंचे शिखरों के पार जाती है। जैसा कि 1960 के दशक के शीर्षस्थ उपन्यासकार, कहानीकार एवं व्यंग्यकार कृष्ण चंदर (23.11.1914-08.03.1977), जिनकी लगभग 100 पुस्तकें प्रकाशित हुई, ने लिखा और कहा था कि-'यदि कोई अपने व्यावसासिक कार्य में दक्षता प्राप्त करता एवं समाज की सेवा करता है तो इसमें कोई विशिष्टता नहीं क्योंकि ऐसा तो उसको करना ही था। किंतु अगर यही व्यक्ति किसी अन्य क्षेत्र में अच्छा

काम करता हुआ प्रशंसा का पात्र बन जाता है तो उसकी ख़ूब चर्चा होती है।' लेखक ने इस तरह की बातों को 'एक गदहे की सरगुजस्त', 'गदहे की वापसी' एवं 'एक गदहा नेफा में' आदि पुस्तकों में कई उदाहरणों के साथ अपनी बात को सबके सामने रखा था; जैसे यदि एक सिविल इंजिनियर एक बढ़िया बांध बनाता है और संगीत की सभा में सितार बजाता है तो समाचार पत्रों में चर्चा कुछ इस प्रकार आएगी–'सितारवादक सिविल इंजिनियर ने अच्छा बांध भी बनवाया था।' संकेत स्पष्ट है। व्यक्ति की सोच, चिंतन एवं कर्तव्य परायणता का निर्णायक मुख्यत: उसका बचपन तथा वह परिवार होता है जिससे वह ऊर्जा प्राप्त कर बड़ा होता है। अत: कन्हैया के व्यक्तित्व को ठीक से समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इस कवि के प्रारम्भिक परिवेश का यथोचित निरीक्षण करें।

डॉ. कृष्ण कन्हैया का जन्म बिहार के एक बहुत ही कुलीन, संभ्रांत कायस्थ परिवार में 1950 के दशक में हुआ था। खेल–खेल में ही इनको उर्दू, फारसी एवं हिंदी भाषाओं से जुड़ी संस्कृति का ज्ञान होता गया जो अब इनकी धरोहर बन कर इनकी कविताओं में समा रहा है। हिंदीतर शब्द इनकी कविताओं में डाले नहीं जाते वे स्वत:–सहजता से समाते जाते हैं। कन्हैया की कविताओं की यह एक बहुत बड़ी विशेषता है जो अंगूठी में जड़े हीरे की तरह चमकती रहती है। संवेदनशीलता एवं संवेदना के स्वर इनको विरासत में मिले, ऐसा प्रतीत होता है। इनकी भाषा–शैली में देशज शब्दों का प्रयोग कविता की मार्मिकता को निखारता जाता है। जैसे संग्रह की 'पौराणिकता' कविता में 'गोइंठे' शब्द का प्रयोग जिसमें इन्होंने 'जैकेट–पोटैटो' का उल्लेख भी किया जो पाश्चात्य संस्कृति को उजागर करता है। ग्रामीण परिवेश के अनुभव कन्हैया की तमाम कविताओं में अनायास ही समाए हैं। स्थानीय विद्यालय से विज्ञान के विषयों में शिक्षा प्राप्त कर 1986 एवं 1990 में क्रमश: एम.बी.बी.एस. तथा एम.एस. पटना मेडिकल कालेज से प्राप्त कर पटना में ही शल्य चिकित्सक से संलग्न हो गए। नियति ने कन्हैया परिवार को 1996 में यू.के. पहुंचा दिया; 2002 तक यहां भी वह शल्य चिकित्सक के रूप विभिन्न अस्पतालों में कार्यरत रहने के बाद जेनरल प्रैक्टिस में आ गए। व्यावसायिक जीवन ने इनके अंदर बचपन में ही प्रस्फुटित हुए संवेदना के बीजों को अंकुरित हो कर फलने–फूलने और निखरने का वातावरण बनाया।

अब यक्ष प्रश्न यह है कि कन्हैया के जीवन में कविता कब उतरी? प्राप्त सूचनाओं के आधार पर तरुणाई के आगाज़ के साथ-साथ कविता ने भी कन्हैया के जीवन में घुसपैठ की जो दिनोदिन अंदर ही अंदर समाती रही। 1970 के दशक में 14 वर्ष की आयु में पहली कविता का प्रस्फुटन हुआ जिसका उत्तरोत्तर विकास होता रहा। एक अन्य संवेदनशील सुखद अनुभूति का परिचय मुझे 2011 में मिला जब मैं 'क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन' के संचालन में व्यस्त था और पता लगा कि कन्हैया एक सिद्धहस्त तबला वादक भी हैं। लगता तो यह है कि कला की त्रिवेणी कन्हैया के जीवन में तरुणावस्था से ही प्रवाहित हो रही है। इन सबका मिला जुला प्रभाव कन्हैया की अनेकानेक कविताओं में पाया जा सकता है। अटकलें लगाने का कोई अर्थ ही नहीं क्योंकि कवि ने स्वयं अपने दूसरे द्विभाषी कविता संग्रह-'किताब ज़िंदगी की' में लिखा है-''विदेश आने के बाद अपनी संस्कृति का गर्व, अपने संस्कार की गरिमा, अपने गाँव की शुद्ध सौंधी खुशबू और मातृभूमि से अनवरत लगाव मेरी अन्तरात्मा को ज्यादा उद्वेलित करता था जिसकी झलक अब मैं अपनी कविताओं में महसूसता हूँ।''

अब एक बार फिर 'किताब संवेदना की' ओर देखने के लिए कुछ अहम बातों पर विचार करना समीचीन लगता है। कवि के पास कई विकल्प थे संग्रह का शीर्षक चयनित करने से पहले। शब्द, रूप, रस, गंध एवं स्पर्श आदि की अनुभूति को व्यक्त करने के लिए हिंदी भाषा में दो शब्द हैं-संवेदन जो कि पुलिंग संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है तथा संवेदना जो स्त्रीलिंग संज्ञा को प्रकट करती है। कन्हैया ने शीर्षक के लिए संवेदना का चयन किया क्योंकि दर्द का एहसास, चाहे जिसका हो, नारी वर्ग के पास अधिक संवेदनशीलता के साथ होता है। नव जीवन का जन्म ही प्रसव पीड़ा से प्रारम्भ होता है। अच्छा कवि वही होता है जो दूसरों की पीड़ा एवं कष्ट को आत्मसात करता है; उनको अपना बना लेता है तथा इनके बारे में जागरूक रहते हुए सहानुभूति रखता है। छायावाद के अग्रणी कवि जयशंकर प्रसाद (30.01.1890-15.11.1937) जी ने अमर कृति 'कामायनी' (1936) में इस सम्बंध में लिखा है-'मनु का मन था विकल हो उठा संवेदन से खा चोट।' क्रौंच पक्षी को तड़पते-मरते देख आदि कवि वाल्मीकि ने सृष्टि की प्रथम कविता को

अनुक्रमणिका

1.	सभ्यता	43
2	व्यवहारिकता	44
3	कान	45
4	नीलकन्ठ	46
5	आसमान	47
6	रिसाव	49
7	हिन्दी	51
8	बुढ़ापा	52
9	बहू	54
10	फ़ितरत	56
11	ज़ुबान	58
12	ऋतुराज	60
13	धर्म का पेड़	62
14	संस्कृति	64
15	डाँट प्यार की	67
16	नाक	69
17	काठ की हाँड़ी	70
18	भरोसा	72
19	पानी	73
20	ठूँठ	74
21	मौन	75
22	रक्षाबंधन	76
23	एकलव्य	78
24	विषमता	80
25	जुगाड़	81
26	चाटुकार	83
27	पारदर्शिता	85
28	समाधान	86
29	पौराणिकता	87
30	वैधव्य	89

31	कमल	91
32	युधिष्ठिर	92
33	महँगाई	94
34	दाँत	95
35	अनर्थ	96
36	फसल	97
37	मुठ्ठी	98
38	ठिठुरन	99
39	आचरण	100
40	रोग	101
41	दरार	102
42	नसीब	103
43	मापदण्ड	104
44	कोख	105
45	रिश्ते	106
46	उपलब्धि	107
47	हाथापाई	109
48	ग्रहण	110
49	जटायु	111
50	दीया	112
51	रिश्वत	113
52	औलाद	115
53	दोहरी संस्कृति	117
54	हादसा	119
55	माँ	122
56	जवाबदेही	123
57	रंगभेद	124
58	बिहार	125
59	प्रमाणिकता	129
60	चक्रव्यूह	130
61	खाई	132
62.	अपेक्षा	133
63.	इन्द्रधनुष	134
64.	जंगल	135